Title : **Resurrection**
Preached by : Dr. W. Eugene Scott, Ph.D., Stanford University
at Los Angeles University Cathedral,
Copy right © 2007 Pastor Melissa Scott

All Rights Reserved

शीर्षक : **पुनरुत्थान**

डॉ. डब्लू. यूजीन स्कॉट (पीएच.डी. स्टैनफर्ड विश्वविद्यालय) द्वारा
लॉस ऐन्जेलिस विश्वविद्यालय के गिरजेघर में दिया गया संदेश
प्रतिलिप्यधिकार © - 2007 पास्टर मेलिसा स्कॉट-सर्वाधिकार सुरक्षित

पुनरुत्थान

मैंने महाविद्यालय में, अपने विश्वास को खो दिया था। मैंने एक जटिल मनोवैज्ञानिक दबाव के परिणाम स्वरूप उसे खो दिया था। यीशु को एक अच्छे और बुद्धिमान शिक्षक के रूप में मानना और उसे मुहम्मद के समान दर्जा देना, जिसने इसलाम मत की स्थापना की, या बुद्ध के समान दर्जा देना, जो भारत का एक राजकुमार था, और जिसने बौद्ध धर्म की स्थापना की, या चीन देश के कनफ्यूशियस का दर्जा देना (जो वास्तव में एक दार्शनिक अधिक था) जिसके प्रवचन संसार के उस भाग को अत्यधिक रूप से प्रभावित करते हैं - या किसी भी धर्म के किसी आदरणीय संस्थापक का दर्जा देना, ठीक प्रतीत होता था।

मैं यीशु को उस वर्ग में रखकर, उसे एक अच्छा व बुद्धिमान शिक्षक मान कर, स्वीकृति प्राप्त कर, स्वयं के लिये प्रज्ञाजीवी की ख्याति प्राप्त कर सकता था। परन्तु इस विश्वास को पकड़े रहना, कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है और इस कारण अलौकिक है, मुझे कदापि ग्रहणयोग्य नहीं था। निक्षिप्त करते हुए, मैं आप को बता दूँ, कि सभी धर्मों के उद्‌गम से सम्बन्धित टेपों की बिक्री के लिये, आजकल टेलिविज़िन पर एक घण्टे का विज्ञापन आता है।

वह मिस्र से प्रारम्भ होता है, परन्तु वे सुमेर तक भी नहीं पहुँचते हैं, जहाँ ये धर्म प्रारम्भ हुए थे (और वे बाबुल तक कभी नहीं पहुँचे)। फिर भी, ऐसा कोई भी ज्ञानी नहीं है, जो इब्रानियों तथा यूनानियों के ऊपर मिस्र के प्रभाव का इन्कार करेगा। साइरस गॉर्डन ने यह स्थापित कर दिया।

किन्तु इस विज्ञापन में, एक मोटा सा व्यक्ति बैठा रहता है, और एक सभ्य, चिकने बालों वाला, वश्य टी.वी सुसमाचार प्रचारक जैसा व्यक्ति भी पास बैठा रहता है, और वे आपको यह बताते हैं, कि सारे धर्म किस प्रकार प्रारम्भ हुए, और फिर वे 16 क्रूसित उद्धारकर्ताओं से सम्बन्धित एक अस्पष्ट उल्लेख करते हैं, जो कि चर्चित निहितार्थ में कहीं नहीं मिलता।

यह केवल "धर्म के प्रति सार्वलौकिक दृष्टिकोण" का एक अन्य उदाहरण है - वह धर्म जो किसी धर्म का भी धर्म नहीं है (जैसा कि स्टैनफर्ड विश्वविद्यालय में कम्पैरेटिव रिलिजन के मेरे प्राध्यापक कहा करते थे) क्योंकि सारे धर्म (उनके विचारानुसार) "एक ही मूल" से निकले हैं। यह दृष्टिकोण मुझ पर हावी हुआ, और यह प्रस्ताव लाया, कि मैं तब तक बुद्धिजीवी नहीं था, जब तक मैं मसीह को अलौकिक, परमेश्वर के पुत्र होने के "प्राचीन" विश्वास को नहीं छोड़ता, और उसे सामान्य धर्माभाव में केवल एक अन्य अभिव्यक्ति,

अन्य संस्थापक के रूप में ग्रहण नहीं कर लेता, और इस प्रकार उसे एक "अच्छे व बुद्धिमान शिक्षक" होने के दायरे में सीमित कर देता।

इस अलौकिक मसीह में, जो एक "अच्छा व बुद्धिमान शिक्षक" कहलाता है, विश्वास रखने के बजाय एक बुद्धिजीवी स्थानापन्न के साथ समस्या यह है, कि वह इन में से **एक हो ही नहीं सकता, जब तक वह दोनों** न हो।

अच्छे होने के लिये आपको वह बताना होगा, जो सत्य है। आप पागल हो सकते हैं, मूर्ख हो सकते हैं, और ऐसी चीज़ पर पूरा भरोसा कर सकते हैं, जो बिलकुल गलत है और अच्छे हो सकते हैं – परन्तु बुद्धिमान नहीं। बुद्धिमान बनने के लिये, आपको सही होना पड़ेगा, अच्छा होना पड़ेगा, ईमानदार होना पड़ेगा, और "उनका" यीशु अच्छा हो सकता है, परन्तु बुद्धिमान नहीं, बुद्धिमान परन्तु अच्छा नहीं, किन्तु निश्चित रूप से दोनों नहीं। क्यों?

इतिहास में, यीशु से सम्बन्धित किसी भी स्रोत में, यदि आप उसे अच्छा व बुद्धिमान कहेंगे, तो आप उसके वचनों तक और उसके कार्यों तक जाएंगे। मैं सुसमाचारों तक पहुँचने के रास्ते को नहीं रोकता, हालांकि, वे ही ऐसे स्थान हैं, जहाँ एक अलौकिक मसीह के विरोधी जाते हैं, और वहाँ से कुछ पदों को ढूँढ़ कर उनकी व्याख्या करते हैं, और टेलिविज़न पर उन्हें लाल रंग से रंगकर सबको दिखाते हैं।

आप सुसमाचारों के मूल तक जा सकते हैं। एक प्राव – काल्पानिक "क्यू" दस्तावेज़ है। एक प्राचीन कलीसिया संस्थापक ने कहा, कि मत्ती ने मसीह के साथ यात्रा करते समय उसके वचनों को, स्थानीय भाषा अरामी में लिखा, न कि यूनानी में हम यह जानते हैं, कि उसका सुसमाचार सम्भवत: अन्ताकिया में यूनानी भाषा में लिखा गया था। ये अरामी भाषा में लिखे "यीशु के प्रवचन", सुसमाचारों का एक सामान्य स्रोत हो सकता था। जो यूनानी भाषा पढ़ सकते हैं, वे सुसमाचारों के भागों की शैली में अन्तर देख सकते हैं, और वे इन भागों का पुनर्निमाण करके ऐसा स्रोत स्थापित कर सकते हैं, जिसका प्रयोग तीनों सिनॉप्टिक (सार व क्रम में समरूप) सुसमाचार लेखकों ने, मत्ती, मरकुस व लूका ने (विशेषकर मत्ती और लूका) किया होगा।

अधिकांश आधुनिक विद्वान मानते हैं, कि मरकुस सबसे पहले लिखा गया था, क्योंकि हम मत्ती और लूका की उसकी नकल की शैली में फिर से अन्तर पाते हैं। सिनाप्टिक (सार व क्रम में समरूप) सुसमाचारों का सबसे हमहत्वपूर्ण सामान्य स्रोत, प्राव – काल्पनिक "क्यू" दस्तावेज़ है (जो "स्रोत" के लिये जर्मन भाषा के शब्द से लिया गया है)। आप पुराने गीतों में भी, आदि खंडों में देख सकते हैं। फिर भी, जहाँ भी आप यीशु को कुछ करते या कहते पाते हैं, वहाँ आप इन उल्लेखों के साथ, मसीह के किसी **कथन** को **या** उसके किसी **आत्मानुमान** के प्रदर्शन को पाते हैं, जो उसके लिये उसमें दिखाई देता है, जो उसे "अच्छा **व** बुध्दिमान" कहलाने को बाधित करता है, क्योंकि प्रत्येक स्रोत में, आप निम्नलिखित में से एक या अधिक पाएंगे:

1. वह सोचता था, कि वह सिद्ध था।

चाहे वह सिद्ध था या नहीं, वह **सोचता** था, कि वह था। कार्लिस्ली ने कहा, कि किसी भी पाप की अनुभूति

न होना, सबसे बड़ा पाप है। उस व्यक्ति के समान घृणित कोई चीज़ नहीं है, जो यह सोचता है, कि उसने कभी कोई गलती नहीं की है। हम ऐसे चेतन, आत्माभिमानी सिद्ध स्वरूप को स्वीकार नहीं करते, क्योंकि मानवजाति की बुद्धिमता इस ज्ञान पर टिकी है, कि कोई भी सिद्ध नही है।
अब विषय यह नहीं है, कि यीशु सिद्ध था या नहीं? हम ऐसे लोगों को संत नहीं मान लेते, जो **सोचते** हैं, कि वे सिद्ध हैं। पूरे पुराने नियम में, परमेश्वर के द्वारा प्रयुक्त उन लोगों का वृत्तान्त है, जो अपने आप को असिद्ध समझते थे– "मै तेरी न्यूनतम दया के भी योग्य नहीं हूँ – मैं कौन हूँ जो इस्राएलियों की अगुवाई करूँ? – मैं तो केवल बालक हूँ । मैं बोल नहीं सकता।"

परमेश्वर तथा मनुष्य के द्वारा ग्रहणयोग्यता की कसौटी, सदा ही असिद्धता का वह सचेतन अहसास रही है। पवित्र लोगों को उस दूरी का अहसास है, जो उनके और परमेश्वर के बीच है। पूरे राज्य में केवल एक ही मनुष्य ऐसा था, जिसने परमेश्वर को देखा; जिस वर्ष राजा उज्जिय्याह मरा, केवल यशायाह ही एक जन था, जिसने परमेश्वर को ऊँचे पर उठे सिंहासन पर विराजमान देखा – इसका यह अर्थ है, कि वह सभी से ऊँचा था। उसके प्रथम शब्द ये थे: "मुझ पर हाय, मैं नाश हुआ"।

हम ऐसे लोगों को संत नहीं समझते हैं, जो सोचते हैं, कि वे सिद्ध हैं – परन्तु यीशु सोचता था, कि वह था। जहाँ भी आप उसे देखे, वह यही विचार प्रस्तुत करता था। वह दूसरों की आलोचना करता था: "सफेदी पुती हुई कब्रों" "मच्छर को छानते और ऊँट को निगल जाते हो।" इसका कारण, कि किसी पर दोष नहीं लगाना चाहिये, और वह चीज़ जिसका प्रत्येक न्यायी को यह विवेकी आभास होना चाहिये, यह है कि अपने संगी मानव पर दोष लगाना इस लिये कठिन है, क्योंकि हमें इस बात का अहसास है, कि अन्दर से हम भी वैसे ही हैं।

किन्तु यीशु में किसी असिद्धता का आभास नहीं था। उसने व्यवस्था को ही बदल डाला, "तुमने सुना है, कि, परन्तु देखो, मैं तुमसे यह कहता हूँ" और फिर आत्माभिमान एवं नैतिक सिद्धता के आभास से, वह कहता है, "यह न समझो, कि मैं व्यवस्था को नाश करने आया हूँ। मैं उसे पूरा करने आया हूँ।"

इसमें एक सम्भव अपवाद है, जब वह धनी, नवयुवक शासक उसके पास आकर बोला, "अच्छे गुरु।" यीशु ने उसे रोका और कहा, "तू क्यों मुझे अच्छा कहता है?" जो यह विचारधारा रखते हैं, कि यीशु स्वयं को सिद्ध नहीं समझता था, वे इस पद का सहारा लेते हैं, वे शेष सार को नहीं समझते, क्योंकि यीशु ने उससे कहा," रुक जा। यहाँ आकर मुझे अच्छा रब्बी, अच्छा गुरु न कह। यदि तू मुझे अच्छा कहेगा, तो यह समझ ले, कि केवल परमेश्वर अच्छा है, तो बिना यह पहचाने, कि मैं भी परमेश्वर हूँ, यह पदवी मुझे मत दे। "

उसमें नैतिक सिद्धता का आभास था उसके आचरण में कहीं पर भी, नैतिक अयोग्यता का आभास नहीं था।

2. उसने सारा अधिकार अपने में रखा।
उसने यह **कहा** भी, कि उसके पास सारा अधिकार था: "यदि तुम मेरे वचनों पर बनाओगे, तो तुम चट्टान पर घर बनाओगे। यदि तुम किसी अन्य वस्तु पर बनाओगे, तो तुम रेत पर घर बनाओगे । स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मेरे पास है।"

एक अन्य उपयुक्त उदाहरण में, उसने व्यवस्था के संदर्भ में कहा (जिस पर समर्थन की पीढ़ियाँ गुज़र चुकी हैं): "तुमने सुना है, कि तुमसे ऐसा कहा गया है, परन्तु देखो मैं तुमसे कहता हूँ....." उसने बिना हिचकिचाए दोष लगाया।

अब, हम ऐसे लोगों को संत नहीं समझते । हम उनसे यह पूछते हैं "आप का यह अधिकार किस पर आधारित है?" उसने उसे स्वयं पर आधारित किया: "देखो, **मैं** तुमसे **कहता हूँ**..... ।"

3. उसने स्वयं को धार्मिक विश्व के केन्द्र पर रखा।

उसने आगे चलकर स्वयं को धार्मिक विश्व के केन्द्र पर रखा। यीशु ने आकर, अपने से अतिरिक्त किसी सिद्धान्त या सत्य का प्रचार नहीं किया । उसने कहा, "मैं ही मार्ग हूँ। मैं ही सत्य हूँ। मैं ही जीवन हूँ। यदि कोई मेरे द्वारा प्रवेश करेगा... मैं भेड़शाला का द्वार हूँ। जो अपने पिता, माता, पत्नी, बच्चों, भाई या बहन, हाँ, अपने जीवन से भी घृणा नहीं करता, और अपना क्रूस उठाकर **मेरे पीछे** नहीं हो लेता, वह **मेरा शिष्य** नहीं बन सकता।" उसने, आपके उसके साथ सम्बन्ध को, जिससे आप उसे धार्मिक विश्व के केन्द्र पर रखें, समस्त धार्मिक आशिषों का निर्णायक बनाया।

4. उसने भीतर से अनन्त काल की बातें कहीं।

आपका, आपके घर से, घनिष्ठता का एक संदर्भ–दायरा है। उदारहण के रूप से, मैं वास्तव में कह सकता हूँ, "मेरे घर के दफ्तर के सोफा का रंग भूरा है।" आप यह नहीं पूछेंगे, "आपको कैसे मालूम?" हम अपने घर के विषय में भीतरी ज्ञान से बात कर सकते हैं, और ऐसा ही होता है। हम विवाद नहीं करते, हम अपेक्षा करते हैं, कि हमारा विश्वास किया जाएगा। यही संदर्भ–दायरा है, जिसका प्रदर्शन यीशु ने किया, जब उसने अनन्तकाल की बातें कहीं। वास्तविक रीति से उसने कहा," मैं वापस जा रहा हूँ। मैं तुम्हारे लिये घर तैयार करने जा रहा हूँ। और कुछ समय बाद, मैं आकर तुम्हें अपने साथ वहाँ ले जाऊँगा।"

उसने फिर वास्तविक रीति से कहा: "इब्राहीम से पूर्व, मैं था।" या फिर, "मैंने शैतान को नीचे गिरते देखा।" या,फिर, "एक पापी के पश्चाताप करने पर, स्वर्ग में स्वर्गदूतों के द्वारा आनन्द मनाया जाता है।" उसने ऐसा प्रतीत कराया और चाहा, कि हम विश्वास करें, कि उसे अनन्तकाल का "भीतरी ज्ञान" था, तथा परमेश्वर के साथ स्वर्गों "में" पहले और बाद में पृथ्वी के पूर्व उसका अस्तित्व था।

5. वह एक फिरोती (छुड़ौती) के रूप में मरेगा।

उसने कहा, कि इस संसार में ऐसी बुराई है, जो कि केवल उसके एक "फिरौती" के रुप में मरने से ही हटाई जा सकती है, और उसने यह उस संदर्भ मे कहा, जहाँ उसके श्रोताओं को भली प्रकार मालूम था, कि फिरौती का क्या अर्थ था। फिरौती वह दाम है, जो आप खोई हुई विरासत को छुड़ाने या किसी को उसके पाप के कारण मौत की सज़ा पाने से छुड़ाने के लिये देते हैं। यह वह दाम था, जो किसी कमी के कारण, कोई गलती करने के कारण, किसी विरासत को खोने के कारण उत्पन्न स्थिति से छुड़ाने के लिये, चुकाया गया था – और इसके चुकाने से जो कुछ आपने खोया था, वह पुन: आपको मिल सकता है। उसने कहा, कि सारा संसार खोया हुआ था, और वह उन्हें छुड़ाने के लिये मर कर छुड़ौती का दाम चुकाने आया था।

6. वह पुनः जीवित होगा।
उसने कहा वह फिर से जीवित होगा (उसने अन्य बातें भी कहीं, किन्तु मैं उनमें से कुछ ही चुन रहा हूँ), कि जब वह मरेगा, तो मृतकों में से पुनः जी उठेगा।

अब, यदि मैं, आपका पादरी, गिरजेघर के मंच पर चढ़कर, माइक को हाथ में लेकर कहूँ, "स्वर्ग और पृथ्वी का समस्त अधिकार मुझे दिया गया है," तो आप सोचेंगे, कि शायद पादरी साहब का अर्थ है, कि वे कहने वाले हैं, "मेरे हाथों में यह वचन, अधिकार के साथ प्रचार करने को दिया गया है।" आप शायद बुरा न मानेंगे और कहेंगे, कि पादरी साहब उस वचन के अधिकार पर ज़ोर दे रहे हैं, जिसमें से वे पढ़ रहे हैं।

परन्तु यदि मैं आगे चल कर यह कहूँ, जैसे कि मैं परमेश्वर से बातचीत कर रहा हूँ, "हे पिता, मैं हाज़िर हूँ। मैंने वह सारा काम कर लिया, जिसके लिये तूने मुझे भेजा था। मुझमें कोई कमियाँ या असिद्धता नहीं है। मुझे व्यवस्था से कोई भय नहीं है, मैंने उसे पूरा कर दिया," और यदि मैं यीशु के समान सिद्ध होने का दावा करने लगूँ, तो आप लोग चौकन्ने हो जाएंगे, और दयापूर्ण दृष्टि से श्रीमती स्कॉट की ओर देखने लगेंगे। और यदि यह कहने लगूँ, "आपकी अनन्तकालीन नियति, आपके द्वारा मुझे अपने जीवन के केन्द्र में रखने तथा मुझे अपना स्वामी बनाने पर निर्भर है," तो इस बीच शायद मुझे रोक दिया जाएगा या मुझे पागल समझा जाएगा। मैं समझता हूँ, कि मैं वहाँ तक पहुँच भी नहीं पाता, जो मैंने यहाँ उल्लेखित नहीं किया है, कि आप लोग सोचने लगते, कि मैं अनन्तकाल का ही नागारिक होऊँगा।

और यदि मैं यहाँ पर खड़े होकर, आत्मिक रीति से नहीं, किन्तु विश्वास किये जाने की अपेक्षा करते हुए कहने लगूँ, "इब्राहीम से पहले, मैं था। आप उसे जानते हैं, जो मनुष्य ऊर से आया था, मैं वहाँ पर था। मैंने, आदम की उत्पत्ति से पहले ही, शैतान को नीचे गिरते हुए देखा था।"

और फिर मैं स्वर्ग के विषय में, उसी सुपरिचितता से बातें कहूँ, जिससे हम अपने घरों के विषय में बातें कहते हैं। यदि मैं आपसे कहूँ कि मेरे घर में सोफे का रंग भदमैला है, और आप पूछें," आपको कैसे मालूम? तो मैं कहूँगा, "क्योंकि मैं वहाँ रहता हूँ।" परन्तु मैं उसी प्रकार की घनिष्ठता का, स्वर्ग की बातों में, दावा कर रहा हूँ। आप उन लोगों को, जो इस प्रकार की बातें करते हैं, पागलखाने में डाल देते हैं। और फिर यदि मैं कहने लगूँ, कि मैं किसी प्रकार का, समस्त संसार के लिये फिरौती हूँ, तो कोई व्यक्ति मेरी पत्नी को ढूँढ़ेगा, कि वह मुझे सम्भाले, इससे पहले मैं "बेकाबू" हो जाऊँ।"

क्या आप थोड़ा रुक कर यह मान लेंगे, कि अपने विषय में ये असम्भाव्य बातों का दावा करने वाला, केवल **एक ही प्रकार का मसीह** है, जो इतिहास के पन्नों पर चला और एक वही है, जिसे आप स्रोतों में खोज सकते हैं। आप अन्य धर्मों के संस्थापकों को वे बातें करते या कहते नहीं पाते, जो यीशु ने कहीं। बुद्ध ने कभी यह नहीं सोचा, कि वह सिद्ध था, वह तान्य के सार से संघर्ष करता रहा, जो कि उस भ्रष्ट इच्छा के लिये उनका अर्थ था, जो पाप को उत्पन्न करती है। वह कामुक इच्छाओं से छुटकारा खोजता रहा, उसने सौन्दर्यवादी योगी के मार्ग को खोजा और इनमें से किसी ने भी उसे हल नहीं दिया। वह उस आठ-पक्षीय मार्ग पर पहुँचा, जिसने उसे एक समाधि की स्थिति में पहुँचा दिया, जब उसने इस जीवन से सचेतन पहचान

को त्याग दिया और कहा कि उसे निर्वाण मिल गया। और जब वह उस स्थिति से वापस बाहर आया, तो उसने अपने अनुयायियों के समक्ष आठ-पक्षीय मार्ग रखा, और केवल इतना कह सका, "इसने मुझे हल दिया। इसे अपना लो; यह तुम्हें भी हल दिलाएगा।"

उसने कभी नहीं सोचा, कि सारा अधिकार उसमें निहित है। इसके बजाय उसने अपने शिष्यों से कहा (और यह उनके शास्त्रों के त्रिपक्षीय खण्ड का एक भाग है) कि वह उनकी अगुवाई करने के योग्य नही है। उसने उनके लिये केवल एक मार्ग छोड़ा, जिसने उसे हल दिया। अधिकार के आभास का अंशमात्र भी उसमें नहीं था। उसने ऐसा कभी भी नहीं सोचा, कि वह धार्मिक विश्व का केन्द्र था। "उस मार्ग" ने हल दिलाया अर्थात् उसका आठ-पक्षीय मार्ग। ऐसा ही औरों के साथ भी हुआ।

मुहम्मद ने कभी नहीं सोचा, कि वह सिद्ध था। वह परमेश्वर का - अल्लाह का-भविष्यद्वक्ता था। उसे **अनन्तकाल के दर्शन** प्राप्त हुए, जिनसे वह रेगिस्तानी मनुष्य प्रभावित हुआ, परन्तु उसने यह नहीं कहा, कि वह वहाँ पर जा चुका है। वह किसी के लिये भी फिरौती के रूप में नहीं मरा। उसके पास अधिकार का एक आधार था: परमेश्वर ने उसे एक दर्शन में वह प्रकट किया। यीशु ने कभी भी, इस भविष्यद्वक्ता के समान, किसी दर्शन की ओर संकेत करके नही कहा, "परमेश्वर कहता है कि..." यीशु ने कहा, "मैं कहता हूँ..." कनफ्यूशियस ने समाज का तार्किक विश्लेषण किया, और उस **बाहरी विश्लेषण** को अपना अधिकार समझा।

अन्य अगुवों में से किसी ने भी अपने आप को धार्मिक विश्व का केन्द्र नहीं बनाया, अपने में अधिकार नही समाया, किसी में भी स्वयं के विषय में सिद्धता का अहसास नहीं था, और इस पृथ्वी पर अपने अल्पकालिक निवास के पहले या बाद में, अनन्तकाल से पहचान स्थापित नहीं की। इनमे से **कोई सा भी** लक्षण, इन अन्य धर्मों के आदरणीय संस्थापकों से न जोड़ा जा सकता है, न उनके द्वारा उनमें होने का दावा किया गया। इस कारण, आप उन का "संस्थापकों" के रूप में ***आदर कर सकते*** हैं।

यीशु में वह लक्षण है, जो कि सी.एस.लुइस के द्वारा "आश्चर्यजनक एकान्तर" कहा गया। **या तो** उसने यह सोचा, कि ये बातें सच्ची थीं, किन्तु वह यह जानने के लिये बहुत ही मूर्ख था, कि किसी मनुष्य के लिये, इन दावों को करना असम्भव था, और इसलिये वह बुद्धिमान हो ही नहीं सकता, और **या** वह यह जानने के लिये बुद्धिमान था, कि ये बातें सच्ची नहीं थीं, परन्तु वह अपने अनुयायियों को धोखा देने में सक्षम था, उसके विषय में यह विश्वास दिलाने के आत्मसेवा के उद्देश्यों के कारण, और इसलिये वह अच्छा नहीं था। इससे यह निष्कर्ष निकलता है, कि जो लोग कहते हैं, कि वह एक अच्छा **व** बुद्धिमान शिक्षक था, दर्शाते हैं, कि उन्होंने उस एकमात्र मसीह का सामना करने का समय ही नहीं निकाला है, जो इतिहास के पन्नों पर चला था।

आपको, मसीह को या तो उस जन के समान देखना होगा, जो अपने आप को एक तले हुए अण्डे के प्रकार समझता हो, या आप उसे उसी तरह का व्यक्ति समझ सकते हैं, जैसा वह कहता है, कि वह है, और यदि वह परमेश्वर है, तो वह सिद्ध **है**, और उसमें अधिकार समाया हुआ **है**, और वह धार्मिक विश्व का केन्द्र

है और उसमें वे योग्यताएं थीं, जो कि सारे संसार के लिये एक फिरौती के रूप में मरने के लिये आवश्यक थीं। उसे अनन्तकाल का ज्ञान था, और वह पुन: जी **उठेगा** (और जी भी उठा)।

आप यीशु को एक अच्छे व बुद्धिमान सौम्यशिक्षक वर्ग में रखकर उसे भूल नही सकते । वह या तो पागल या झूठा मनुष्य है, या **वह वही है, जो वह कहता है कि वह है।**

तो जब मैं इस चौराहे पर पहुँचा, तो मैंने यह निर्णय लिया, कि मैं स्वयं ही इसका हल ढूँढ़ निकालूँगा। विषय, इतिहास के इस तथ्य के इर्द-गिर्द फैला हुआ है। जिन्होंने चिन्ह माँगे, उनसे यीशु ने कहा, "मैं तुम्हें चिन्ह दिखाऊँगा।" केवल एक ही प्रतिभूत चिन्ह है, जिस पर विश्वास टिका रह सकता है। परमेश्वर कई बार इस प्रतिभू (गारंटी) के पार जा चुका है, परन्तु इस सत्य का समर्थन करने के लिये **जो एकमात्र चिन्ह परमेश्वर ने प्रतिभूत किया,** वह योना का चिन्ह था, जो कि यीशु के द्वारा, मसीह की मृत्यु व **पुनरूत्थान** के रूप में अनुवादित किया गया।

इतिहास के खुले पन्नों पर, एक बिन्दु पर, एक **सत्य**, उभर कर आया। परमेश्वर ने मानव देह के आवरण में आ जाने और व्यवस्था को पूरा करने का निर्णय लिया, ताकि वह अवतरित हो जाए, और फिर हमारे छुटकारे के लिये दाम चुकाने के लिये हमारे बदले में मरने का निर्णय लिया, जो कि व्यवस्था की परिपूर्णता थी, ताकि वह फिर से जी उठे और हमें उसके नये जीवन सहित एक परिवार में गोद ले ले, जिसमें व्यवस्था का बोझ न हो और जो कि हमें, परमेश्वर की छुटकारा देने वाली सामर्थ की हमारी आवश्यकता सिखाने वाला शिक्षक था।

फिर वह इतिहास के मंच पर नज़र आया, और यही मसीहत का दावा है, और उसने एक ऐसे सत्य से स्वयं को प्रमाणित किया, जिस का विश्लेषण किया जा सकता है।

अब यह एक **सत्य** है, कि कोई ऐतिहासिक निश्चितता जैसी चीज़ नहीं है। मैंने यह बात, मेरे पूर्वस्नातक के मुख्य विषय इतिहास का अध्ययन करने के दौरान सीखी। "ऐतिहासिक निश्चितता" का अर्थ है, कि प्रमाण का प्रत्येक कल्पनीय अंश उपस्थित है। सम्भव प्रमाण के रूप में आप जिस भी चीज़ की कल्पना कर सकते हैं, उसकी उपस्थिति, ऐतिहासिक निश्चितता बताने के लिये होना आवश्यक है। जिस क्षण कोई घटना घट कर समाप्त हो जाती है, उसी क्षण आप उसे देखने की प्रत्यक्षदर्शी योग्यता को खो देते हैं। कैमरे सहायक होते हैं, परन्तु एक तत्व लुप्त हो चुका है, इस कारण, ऐतिहासिक निश्चितता की परिभाषा आपेक्षिक (संगत) है। आप केवल मनोवैज्ञानिक निश्चितता की आशा कर सकते है, जहाँ पर इतिहास के उपलब्ध तथ्यों के प्रति जागरूकता, मनोवैज्ञानिक रीति से प्रतिक्रिया उत्पन्न करती है, और उस प्रतिक्रिया को अनुभव न करना, असम्भव है।

कोई भी चतुर अधिवक्ता जानता है, कि न्यायालय में ऐसा कोई अधिवक्ता नहीं होता, जो कुछ कहता है, और न्यायाधीश उसे डाँटता है, कि अधिवक्ता को कहने से पहले ही मालूम था, कि उसे ऐसा नहीं कहना चाहिये था; वह चाहता है, कि न्याय-सभ्य (जूरी) उसे सुने। और फिर न्यायाधीश अधिवक्ता पर चिल्लाता

है, और वह कहता है, "जी हाँ, यॉर ऑनर," और अपनी छोटी सी, विनम्र सी भूमिका निभाता है। उसे ठीक प्रकार से मालूम है, कि उसे क्या करना है। और फिर न्यायाधीश आडम्बरी नज़र से जूरी की ओर देखकर कहता है, "अपने विचारें में से उसे निकाल दो।" ठीक है, बैंग! आप केवल इसी प्रकार से उसे निकाल सकते हैं; यह अन्दर है। और आप उसे देख सकते हैं, सुन सकते हैं और महसूस कर सकते हैं, और जो भी अन्य प्रमाण हैं, आपमें प्रतिक्रिया अवश्य होगी।

परमेश्वर ने पुनरूत्थान द्वारा अपने पुत्र का समर्थन (न्याय संगत सिद्ध) किया।
पौलुस मार्स हिल में आया; वहाँ पर दार्शनिक, सभी ईश्वरों पर विचार करने एकत्रित हुए हैं, और बहुत चिन्तित हैं, कि वे एक ईश्वर को छोड़ देंगे, जिसके लिये उन्होंने अनजान परमेश्वर के नाम से वेदी बना रखी थी। उसने इस को, मसीह के विषय में बातचीत करने के लिये एक लीवर (प्रभावी वस्तु) की तरह पकड़ लिया। वह कहता है, "मैं आप लोगों को बताता हूँ, कि यह अनजान परमेश्वर कौन है," और मसीह का प्रचार करता है, जिसका उसने कहा, कि परमेश्वर ने **पुनरुत्थान द्वारा अभिषिक्त किया।** पौलुस ने कहा, कि यदि पुनरूत्थान नहीं है, तो हमारा विश्वास व्यर्थ है, और हम परमेश्वर के झूठे गवाह ठहरे, क्योंकि हमने यह गवाही दी है, कि उसने मसीह को जिलाया।

कलीसिया का सबसे पहला संदेश वह था, जो पतरस ने पिन्तेकुस्त के दिन दिया, "यह यीशु जिसे तुम जानते हो... ।" और उसने वह सत्य बताया, कि वे उसे क्रूसित हुआ जानते थे; वे यह भी जानते थे, फिर उसने उस चीज़ की गवाही दी, जिसे वे नहीं जानते थे, "**इसी यीशु को परमेश्वर ने जिलाया,** जिसके हम सब गवाह हैं," और इस प्रकार उसने इस प्रमाणित करने वाले सत्य को परिचित किया। अपने एक उपदेश में, पौलुस ने कहा, "वह देखा गया, और वह देखा गया," और फिर वह गवाहों की चर्चा करता है, और जब वह भीड़ की चर्चा करता है, तो कहता है, ".... एक ही साथ लगभग पाँच सौ भाईयों को।"

उन दिनों में, आप प्रत्यक्षदर्शी गवाहों को एकत्रित कर सकते थे; आजकल नहीं। किन्तु किसी भी अन्य ऐतिहासिक तथ्य के समान, जिसने भी शेक्सपियर से लेकर जूलियस सीज़र तक के आस्तित्व के विषय में लिखा होगा, आप इतिहास के उस **सत्य** को खोज सकते हैं, जिस पर मसीहत आधारित है, नामार्थ:

यीशु कब्र में से बाहर आया।
और मैं आरम्भ में ही यह कह दूँ, कि यदि कोई भी मुझे सुनने वाला व्यक्ति, इस गिरजेघर में आकर, यीशु के दावों को अपना बनाकर बोलने लगे, तो उन्हें मैं यह सलाह दूँगा, कि वे अपना मनोविश्लेषण कराएं और किसी अस्पताल में भर्ती हो जाएं – जब तक मैं उनकी आँख में एक चमक को न देखूँ, कि वे मुझसे मज़ाक कर रहे हैं –क्योंकि कोई भी नश्वर मानव इन दावों को नहीं कर सकता है। परन्तु यदि इन दावों के साथ वह व्यक्ति कहे, "मुझे मार डालो, और तीन दिन मैं कब्र में से बाहर निकलूँगा और ऊपर उड़ जाँऊगा," और तीन दिन बाद वही व्यक्ति कब्र में से बाहर निकल कर ऊपर उड़ जाए, तो मैं दावे करने वाले को फिर से ध्यान से देखूँगा । मुझे मेरे विश्वास को आधारित करने के लिये और कुछ भी नहीं चाहिये। मुझे वे सारे अद्‌भुत दार्शनिक त्रिएक परमेश्वर से सम्बन्धित सिद्धान्तों की आवश्यकता नहीं है। **यह पुनरूत्थित जन ही, यदि ऐसा हुआ तो, एक व्यक्तिगत व सच्चे परमेश्वर के लिये मेरा प्रारम्भिक बिन्दु है।**

यदि मुझे इतिहास के मंच पर, वह जन मिल जाए, जिसके शब्दों पर मैं जीवन भर खोज करता रहूँ, जो सिद्ध था, समस्त अधिकार का केन्द्र, समस्त धार्मिक विश्व का केन्द्र और ये सभी कुछ, और जिसने मुझे छुड़ाया, जिलाया और अनन्तकाल में मेरे लिये भवन तैयार किये, तो मुझे ऐसा ही परमेश्वर चाहिये। मैं यहीं से आरम्भ करूँगा।

विचार – वस्तु यह है: क्या वह कब्र में से बाहर निकला?

आप इसका हल, इसके विषय में सोचने से नहीं निकाल सकते: आप को खोज करनी पड़ेगी। अब, किसी भी चीज़ पर खोज करने के लिये, आपको **तथ्यों की नींव** की आवश्यकता होगी। अधिकांश लोग अस्पष्ट मस्तिष्क के होते हैं, वे यह विवाद करते हैं, कि यीशु का पुनरूत्थान नहीं हुआ, क्योंकि ऐसा हो ही नहीं सकता, और जो भी कहता है, कि ऐसा हुआ, झूठ बोल रहा होगा। यदि कोई भी अन्य सत्य है, तो उसकी खोज कर सकते हैं।

यदि आप पूछते हैं, "क्या इस विशेष रविवार को, एक घण्टे में, स्कॉट ने यह संदेश प्रचार किया था या नहीं?" तो आप को अनुमान लगाना पड़ेगा, कि मैं वहाँ था, और मैंने संदेश दिया था। आपको मानना पड़ेगा, कि यहाँ पर यह गिरजाघर स्थित है। आपको मानना होगा, कि यह रविवार आकर गया। हमें उन चीज़ों पर विवाद नहीं करना है। यह निर्धारित करने के लिये, कि यह संदेश एक घण्टे से कम में दिया गया, हम इन चीज़ों को यूँ ही मान लेते हैं। इससे पहले कि हम विवाद करें, कि मैंने एक घण्टे (या अधिक) प्रचार किया, हम कम से कम यह मान लें, कि मैंने प्रचार किया। आपको यह मानने की आवश्यकता नहीं है, कि वह अच्छा था या बुरा, केवल इतना कि मैं यहाँ पर था, और मेरा मुँह चल रहा था, और मैंने बातें कीं। इसको **संदर्भ-दायरा** कहते हैं, अर्थात स्वीकृत निदेश।

और यदि कोई कहता है, "अरे, मैं विश्वास नहीं करता कि आप वहाँ थे !" तो विवादी संदर्भों से अन्त करें। यह प्रमाणित करना, कि मैं यहाँ पर था, इसे प्रमाणित करने से ज़्यादा सरल है, कि मैंने कितनी देर प्रचार किया; क्योंकि अभी तक आपको यह नहीं मालूम, कि मैंने कब आरम्भ किया। क्या वे प्रारम्भिक कथन थे? क्या वह बोर्ड पर पहला निशान था? इस पर अधिक विवाद हो सकता है, परन्तु यह प्रमाणित करना, कि मैं यहाँ पर था या नहीं, इससे अधिक सरल है।

आपको पुनरुत्थान को भी इसी दृष्टिकोण से देखना होगा। पुनरुत्थान की चर्चा करने से पहले, कुछ तथ्यों को मान लेना होगा। उनमें से एक है, क्या यीशु जिया था? हम उस बात की चर्चा क्यों कर रहे हैं, कि वह जी उठा था नहीं, यदि हम यह नहीं मानते, कि वह जिया? एक समय था, जब इस पर भी विवाद होता था; अब ज़्यादा नहीं होता। आज के उद्देश्यों के कारण और पुनरुत्थान की किसी भी सार्थक चर्चा के लिये, आप को कम से कम निम्न बातों को मानना होगा:

तथ्या1 कि यीशु जिया.

यदि आपको इस पर विश्वास नहीं है.... । क्या आप मानते हैं, कि शायद यह प्रमाणित करना अधिक सरल है, कि वह कहीं पर, किसी समय पर जिया, बजाय इसे प्रमाणित करना, कि वह मर कर फिर जी उठा? क्या आप इससे सहमत हैं? तो मुझे अधिक सरल काम करने दें। "ठीक है, मुझे पक्का नहीं मालूम, कि वहा जिया, तो मुझे पुनरुत्थान की बातें मत सुनाओं।" मुझे इसके अतिरिक्त दूसरे काम करने का अधिक समय है। पुनरूत्थान के विषय मे किसी ऐसे व्यक्ति के साथ विवाद न करें, जो यह विश्वास ही नहीं करता हो, कि यीशु जिया। यह प्रमाणित करना सरल है; जब तक यह निश्चित नहीं हो जाता, अगले बिन्दु पर न जाएं:

तथ्य 2. कि वह यरूशलेम में कुछ यहूदी धार्मिक अगुवों के कहने पर क्रूसित किया गया। रोमी अधिकारियों ने उस पर मृत्युदण्ड की आज्ञा चलाई और उसे मार डाला।

कुछ यहूदी अगुवों के कहने पर (सारे यहूदी नहीं, वे इस बात के दोषी नहीं थे, उसके शिष्य यहूदी थे, केवल कुछ यहूदी अगुवों ने ऐसा किया) रोमियों ने उसे मार डाला। जब तक आप उसपर विश्वास नहीं करते, तो पुनरूत्थान तक जाने मे कोई बुद्धिमानी नहीं है। पुनरुत्थान के बजाय, क्रूसीकरण को प्रमाणित करना अधिक सरल है।

तथ्य 3. कि यह समझा गया, कि वह मर गया था।

यह ध्यान दें, कि मैं कहता हूँ, कि यह ***समझा गया*** कि वह मर गया था, क्योंकि कुछ लोगों का विश्वास है, कि वह कब्र में से पुनर्जीवित होकर बाहर आ गया। यह समझा गया कि वह मरा था: तलवार से छेदा गया, क्रूस पर से उतारा गया, कब्र में ले जाया गया । वैसे भी एक सिद्धान्तवादी ने यह कथा गढ़ी है, कि यीशु ने इसका अभ्यास किया था, और लोगों से कहा था, कि वे उसे कब्र तक ले जाएं, यह जानते हुए, कि वह बाहर आ जाएगा। उसने पहले इसका अभ्यास लाज़र पर किया (ऐसा यह सिद्धान्त कहता है) परन्तु लाज़र तो बाहर आने से पहले सड़ने लगा था। ऐसे कुछ सिद्धान्त केवल पुनरूत्थान को मानने से अधिक मस्तिष्क पर ज़ोर डालते हैं, परन्तु कम से कम उसे मरा हुआ तो समझा गया था। यदि आप इसपर विश्वास नहीं करते, तो अभी पुनरुत्थान की व्याख्या करने का समय नहीं आया है।

तथ्य 4. वह एक ज्ञात, सुगम्य कब्र में दफनाया गया।

उस समय के लोग, विशेषकर वे यहूदी व रोमी अगुवे, जो क्रूसीकरण में शमिल हुए थे, जानते थे, कि कब्र कहाँ थी, और वहाँ तक पँहुच सकते थे। आप पत्थर तथा पहरूओं के कारण उसके भीतर नहीं जा सकते थे, परन्तु कब्र का स्थल ज्ञात व सुगम्य था।

तथ्य 5 फिर यह प्रचार किया गया, कि वह जी उठा है।

मैं इस समय यह नहीं कह रहा हूँ कि वह जी उठा, परन्तु यह कि यहाँ **प्रचार किया गया,** कि वह जी उठा है, कि कब्र खाली है और यीशु स्वर्ग में चढ़ गया है। यह याद रखना आवश्यक है, कि पूरे प्रचार में निम्न शामिल थे: खाली कब्र, मृतकों में से जी उठना और स्वर्ग में चढ़ जाना। इन तीनों दावों का प्रचार किया गया।

अब, यदि आपको यह विश्वास नहीं है, कि इन दावों का प्रचार हुआ, तो मैं आज कर रहा हूँ: परन्तु उसका प्रचार **उसी नगर में, प्रातः ही हुआ,** जहाँ वह मारा गया था! यदि आप को इस पर विश्वास नहीं है (कि

इन सभी दावों का प्रचार किया गया) तो यह तो पुनरूत्थान को प्रमाणित करने से अधिक सरल है।
तथ्य 6. आज, जितने हम पुनरूत्थान का खंडन करने में रूचि रखते हैं; उससे कहीं अधिक वे यहूदी अगुवे रूचि रखते थे, जिन्होंने क्रूसीकरण को भड़काया था।

सहज बुद्धि आपको यह बताएगी, कि जिन यहूदी अगुवों ने क्रूसीकरण को भड़काया था, उन्हें पुनरुत्थान का खंडन करने में अधिक रूचि थी, इसके बजाय कि किसी अन्य जन को हो, जो कि उससे 2000 वर्ष दूर हो, और उसकी प्रज्ञात्मक रूप से तथा संशय सहित व्याख्या कर रहा हो, क्योंकि इन यहूदी अगुवों की ख्याति, उनकी रोज़ी रोटी और उनके जीवन दांव पर लगे हुए थे। यदि उन्होंने उस पर एक राज्य स्थापित करने व ईशनिंदा करने का दोष लगाकर, उसके क्रूसीकरण को भड़काया, तो अचानक ही, यदि यह सच है, कि वह मृतकों में से जी उठा, तो उन्हें इस सिद्धान्त का खंडन करने में अधिक मनोवैज्ञानिक रूचि थी, और वे उससे अधिक दिखावा करेंगे, जितना कि किसी ईस्टर रविवार को अन्य लोग कर सकते हैं।

तथ्य 7. उसके पुनरूत्थान के दावों का प्रचार करने के लिये उसके शिष्यों को सताया गया।
इस प्रचार के कारण, उन्हें बुरी तरह सताया गया, और यह उन्हीं यहूदी अगुवों के द्वारा हुआ, जिन्होंने उन्हें सबसे पहले सताया था – पहले उन्हें झूठा कहा, फिर कहा, कि वे शव को चुराकर ले गये। प्रेरितो के काम की पूरी पुस्तक में, पुनरूत्थान के विषय में प्रचार करने के लिये, शिष्यों के सताए जाने की चर्चा है।

फिर, कई शताब्दियों बाद, मसीही लोग, सामान्य रीति से, रोमी साम्राज्य में पाई जाने वाली बुराईयों के लिये, बलि के बकरे की तरह निशाना बन गये, और अन्य कारणों से दण्डित किये जाने लगे, किन्तु प्रत्येक आलेख दर्शाता है, कि **प्राचीनतम सताव** एक दम रूक जाता, यदि शिष्य इस पुनरुत्थान तथा यीशु के स्वर्गारोहण का प्रचार करना बन्द कर देते ।उन्हें इसी कारण सताया गया, क्योंकि यहूदी अगुवों की ख्याति दांव पर थी।

तथ्य 8. कब्र खाली थी।
सहज बुद्धि यह कहती है, कि इन सब बातों से हम इस सत्य की ओर पहुँचते हैं, कि यदि वे यहूदी अगुवे जिन्होंने क्रूसीकरण को भड़काया था (तथ्य 2), और जिन्हें अपनी जीविका के दांव पर लगे होने के कारण अधिक रूचि थी (तथ्य 6) और यदि वह एक ज्ञात, सुगम्य कब्र में दफनाया गया था (तथ्य 4) तो उन्होंने एक दम कब्र पर जाकर शव को पाया होगा। तो फिर यह स्वयं सिद्ध करता है, कि कब्र खाली थी।

कब्र अर्थहीन हो गई, क्योंकि वह खाली थी। कई शताब्दियाँ गुज़र गईं और कब्र, इतिहास के पन्नों में खो गई, **क्योंकि उसमे कोई शव नहीं था।** फिर जब पुरोवशेष युग का आगमन हुआ, तो लोगों की उसकी कब्र में रूचि जागृत हुई, जिसमें अब तक किसी की रूचि नहीं थी, क्योंकि उसमें किसी का शव ही नहीं था, और उसकी खोज चालू हुई।

और आज सारा कलीसियाई जगत, प्राचीन ऐतिहासिक गिरजाघरों के श्रेष्ठ स्थल और गॉर्डन की कब्र के ऊपर, जिससे सारे प्रोटेस्टेन्ट लोग अपना सम्बन्ध स्थापित करते है, झगड़ रहा है, जो कि बस-स्टेशन के

पास, "गुलगुता" नामक चट्टान की कगार के नीचे पाया जाता है, और जिसके ऊपर अरबियों का कब्रिस्तान है। यह झगड़ा इसलिये आरम्भ हुआ, क्योंकि वह कब्र इतिहास में लुप्त हो गई थी; उसमें कोई शव नहीं था।

अब, इन तथ्यों को प्रमाणित करना, पुनरूत्थान को प्रमाणित करने से अधिक सरल है, परन्तु जब तक इन तथ्यों को माना न जाए, आप पुनरुत्थान से सम्बन्धित सभी सिद्धान्तों को समझ नहीं सकते । उदाहरण के रूप से, इसका प्रचार इतने प्रभावी ढंग से हुआ है, कि सभी शताब्दियों में, लोगों ने इसको समझाने के लिये विभिन्न सिद्धान्त प्रस्तुत किये हैं। अब, हर ईस्टर पर मेरा ऐसा करने का कारण यह है, कि मैं यह दर्शाना चाहता हूँ, कि जब आप आते हैं, तो आपको अपने मस्तिष्क को बाहर छोड़कर आने की आवश्यकता नहीं है। प्रज्ञावान विश्लेषण करना ठीक है।

आप केवल लोगों को **विश्वास** नहीं करवाते हैं, किन्तु यदि आप प्रमाण का सामना करेंगे, तो अन्दर कुछ होता है, और एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया होगी। जो लोग पुनरूत्थान का खंडन करते हैं, और ऐसा जीवन जीते हैं, जिसमें इसका कोई प्रमाण नहीं होता, उनसे मेरा झगड़ा यह है कि मैं उनसे 15 प्रश्न पूछ सकता हूँ, और यह पाता हूँ, कि उन्होंने अपने जीवन के 15 घण्टे भी इसके प्रमाण ढूँढ़ने में नहीं लगाए हैं।

यदि पुनरुत्थान सच है, तो यह विश्व का केन्द्र है। यदि पुनरूत्थान सच है, तो यह **इतिहास का केन्द्रीय तथ्य** है। संसार के सभी मूर्खों में आप भी एक मूर्ख हैं, यदि आपने सोचा, कि आपके पूरे जीवन में यह कम से कम, 30 घण्टे के अध्ययन के योग्य नहीं हैं । इसके अलावा, इस संसार में बहुत से बुद्धिमान लोग हैं, जिन्होंने इस पर खोज **की है,** और वे संतुष्ट (कायल) हुए हैं। इसीलिये मैं ऐसा कर रहा हूँ। क्योंकि शिष्यों के प्रचार अपने स्वभाव में इतने सच्चे हैं, उनके विश्वास को समझाने के लिये कई प्रकार के सिद्धान्त उभर आए हैं। परन्तु यदि आप उपरोक्त आठ तथ्यों को मानें, तो ये सिद्धान्त स्वीकृत नहीं होंगे।

सिद्धान्त 1 – शिष्यों ने शव को चुरा लिया।
सिद्धान्त 2 – यहूदी अगुवों ने शव को चुरा लिया।
सिद्धान्त 3 – रोमी अगुवों ने शव को चुरा लिया।
सिद्धान्त 4 – स्त्रियाँ गलत कब्र पर गईं।

आपको मालूम, कि उस समय अंधेरा था और वे "महिला पदचालकों के समान खो गईं – उन दिनों में महिलाएं ड्राइवर नहीं होती थीं, केवल महिला पदचालक। वे गलत कब्र पर चली गईं, और उन्होंने यह विश्वास कर लिया, कि वह जी उठा है, और मेरा अर्थ है, वे बगीचे में से चीखती, चिल्लाती हुई बाहर भागी, "हम वहाँ गये थे, और वह वहाँ नहीं था!" वे गलत कब्र पर गईं, वे ऐसी कब्र पर गईं थीं, जो किसी और के लिये बनी थी।

सिद्धान्त 5 – यह सब विभ्रांति थी।
महिमामय दिवास्वप्न। वे सच्चे थे; उन्होंने विश्वास कर लिया, कि ऐसा हुआ था, क्योंकि उन्हें यह विभ्रांति हुई थी।

सिद्धान्त 6 – पुनर्जीवन सिद्धान्त।
वह क्रूस पर चढ़ाया गया, और मरा हुआ समझा गया, और एक ज्ञात कब्र में दफनाया गया, परन्तु वह मरा नहीं था कब्र की ठण्डक में वह पुनर्जीवित हो गया और कफन के कपड़ों में बाहर आ गया और परमेश्वर का धन्यवाद हो, पहरूए सो रहे थे और उसने पत्थर को हटाया – और देखो, फ्रैंकिंस्टाइन बाहर निकल आया!

सिद्धान्त 7 – शिष्यों ने झूठ बोला।
उन्होंने झूठी कहानी गढ़ी। उन्होंने गलत घोड़े पर बाजी लगाई थी, और वे इसके साथ जी न सके, तो उन्होंने यह पूरी कहानी गढ़ दी और उन्हें यह इसका हिसाब लगाने के लिये सात सप्ताह लग गये, और फिर उन्होंने इसे सुनाया।

सिद्धान्त 8 – यह सब सच है।
वे सही रूप से बता रहे हैं, कि उन्होंने क्या अनुभव किया और क्या देखा। अब, जब आपने, इतिहास में एक मात्र यीशु के विषय में विचारते हुए, "आश्चर्यजनक एकान्तर" देखा था, कि या तो वह एक पागल, मूर्ख था झूठा है, या वही है, जो वह कहता है, कि वह है और इसमें दैविकता को परिभाषित करने की आवश्यकता है, उसी प्रकार यहाँ पर एक "आश्चर्यजनक एकान्तर" है।

अपने आप में, ये सारे सिद्धान्त ठीक प्रतीत होते हैं। पहला सिद्धान्त भी (शिष्य शव को चुराकर ले गये) जो कि यहूदी अगुवों ने स्वयं गढ़ा था । परन्तु इस सिद्धान्त से, ऊपर से ऐसा लगता है, कि शिष्य झूठे थे। तो आप को फिर एक "आश्चर्यजनक एकान्तर" ढूँढ़ना पड़ेगा।

मुझे घृणा है – जब मैं इतिहास में स्नातक होने का अध्ययन कर रहा था, तब से मुझे घृणा है – मुझे एक दंभी, वस्तुनिष्ठ इतिहासकार से घृणा है, जो कहता है: मैं वस्तुनिष्ठ हूँ। मेरा कोई विचार नही है। एक ऐसे ज्ञानी व्यक्ति के समान कोई चीज़ नहीं है, जिसका अपना कोई विचार न हो। ज्ञान विचारों को उभारता है: तथ्यों का सामना करने के परिणामस्वरूप आप तटस्थ नहीं हो सकते । ज्ञान, विचार को उभारता है, और जब आप यीशु के विषय में ऊपर दिये गये तथ्यों का अध्ययन करते हैं, तो केवल दो विकल्प नज़र आते हैं। **<u>या तो</u>** शिष्यों ने झूठ बोला **<u>या</u>** उन्होंने ईमानदारी से सच बता दिया। आइये, हम प्रत्येक सिद्धान्त को देखें, और विकल्प तक पहुँचें:

 # 1. उन्होंने शव को चुरा लिया (सिद्धान्त 1), फिर उन्होंने स्पष्टतया झूठ बोला (सिद्धान्त 7)।
 # 2. यहूदी अगुवों ने शव को चुरा लिया (सिद्धान्त 2) ? तथ्य यह इन्कार करते हैं, कि: वे औरों से अधिक इस प्रचार का खंडन करना चाहते थे, (तथ्य 6) तो वे कब्र को खाली क्यों करना चाहेंगे? और यदि उन्होंने ऐसा किया भी, तो वे कह सकते थे, "थोड़ा रूको, हमने उसका शव कब्र में से निकाल लिया था। "वे इस कहानी की कल्पना भी नहीं कर सकते थे, उन्होंने केवल शिष्यों वाली कहानी सुनाई (सिद्धान्त 1) परन्तु यदि वह भी तर्कसंगत है, तो ध्यान दें, कि शिष्यों ने केवल एक खाली कब्र व पुनरुत्थान के विषय में प्रचार नहीं किया। उन्होंने एक दृश्य एवं जीवित यीशु का प्रचार किया, जिसके साथ उन्होंने भोजन किया; उसी जोश से उन्होंने यीशु का स्वर्गारोहण प्रचारित किया। तो यदि यहूदी अगुवों के द्वारा शव का

चुराया जाना, खाली कब्र को समझाता है, शिष्य फिर भी पुनरूत्थित शरीर व स्वर्गारोहण के अतिरिक्त बयान सुना रहे हैं, तो उन्होंने कहानी का अधिकांश भाग "बढ़ा–चढ़ा कर गढ़ा" – अन्य शब्दों में, **वे अब भी झूठ बोल रहे थे।**

 # 3. रोमी अगुवों ने शव को चुराया (सिद्धान्त 3) ? यरूशलेम में प्रचलित विवादों के मध्य, और जो सम्बन्ध यहूदी अगुवों के रोमियों के साथ थे, जिनके कारण उन्होंने क्रूसीकरण को उभारा, इन सब के होते हुए क्या आप नहीं सोचते है, कि उन्होंने इस बात को प्रदर्शित कर दिया होता, कि रोमी सरकार के अफसर शव को चुरा ले गये? परन्तु यदि यह खाली कब्र को समझा देता है, तो क्या यह उनके द्वारा एक पुनरूत्थित शरीर और स्वर्गारोहण के साथ उनके अनुभवों का प्रचार करने की, शिष्यों की ज़िम्मेदारी को कम नही कर देता ? तो इसका अर्थ है, कि वे अभी भी झूठ बोल रहे थे।

 # 4. स्त्रियाँ गलत कब्र पर चली गईं (सिद्धान्त 4) ? वह एक ज्ञात, सुगम्य कब्र थी (तथ्य 4) । यहूदी अगुवों की रूचि (तथ्य 6) उन्हें ज्ञात कब्र तक ले जाती, और गलत कब्र के सिद्धान्त को समझाने के लिये उन्हें केवल उस कब्र तक जाना था, जहाँ शव है – और वे ऐसा अवश्य करते।

 # 5. विभ्रांति (सिद्धान्त 5) ? वैसे खाली कब्र (तथ्य 8) उसका खंड करता है। यदि यह केवल विभ्रांति होता, तो कब्र में शव अवश्य होता। तो इसे आप को, शव को प्रेत बनकर उड़ जाने से जोड़ना होगा। इसलिये वे अभी भी झूठ बोल रहे थे।

 # 6. पुनर्जीवन (सिद्धान्त 6) ?
वैसे वह फ्रैंकिंस्टाइन दैत्य, जो कब्र में से बाहर आया, वह उस अच्छे यीशु के समान कदापि नहीं था, जिस का प्रचार किया गया था। यह खाली कब्र को तो समझा सकता है, परन्तु यह उस यीशु को नहीं समझाता, जिसका उन्होंने प्रचार किया था, स्वर्गारोहण को नहीं समझाता – उन्होंने अभी भी शेष कहानी को गढ़ा था।

तो आप चाहे, किसी भी प्रकार इसे देखे, यदि आप उन आठों तथ्यों को मान लें, जो कि पुनरुत्थान को प्रमाणित करने से अधिक सरल हैं, तो केवल दो विकल्प हैं, दो निष्कर्ष, क्योंकि यह हमें गवाहों की सत्यवादिता तक ले जाता है। इसीलिये मैं उन्हें पसन्द नहीं करता, जो पुनरुत्थान का इन्कार करते हैं, और जिन्होंने शर्लक द्वारा रचित **ट्रायल ऑफ द् विटनेसेस** नामक पुस्तक नहीं पढ़ी है। उसने एक न्यायालय की कल्पना की है, जहाँ सारे गवाह एकत्रित हैं और उन्हें एक अंग्रेज़ी न्यायालय के प्रमाणों का सामना करना पड़ रहा है। या वे जिन्होंने "**हू मूव्ड द् स्टोन** नामक पुस्तक नहीं पड़ी है, जो एक वकील ने लिखी है, जो कि पुनरुत्थान का खंडन करने निकला था, और अंत में उसके पक्ष में एक अत्यधिक विश्वासोत्पादक प्रमाण विवाद लिख बैठा।

आप एक "आश्चर्यजनक एकान्तर" का सामना कर रहे हैं: **या तो** विकल्प1 (जो कि सिद्धान्त 7 है): इन शिष्यों ने यह कहानी गढ़ ली थी, और यह सब कुछ झूठ था, **या** विकल्प 2 (जो कि सिद्धान्त 8 है): **वे, वही सुना रहे हैं, जो कि उन्होंने ईमानदार मनुष्य होने के नाते, सच में अनुभव किया।**

अबू, यदि आपको "तथ्यों," "विकल्पों" और "सिद्धान्तों " के बीच अन्तर करने में परेशानी हो रही हो, तो

मैं इन्हें समझाता हूँ: हमारे सामने 8 तथ्य हैं, जो कि आठ सिद्धान्तों को केवल 7 और 8 आश्चर्यजनक एकान्तर सिद्धान्त में घटा देते हैं, जो कि दो विश्वसनीय सिद्धान्त बन जाते हैं, जिससे केवल दो शेष विकल्प रह जाते हैं, "सिद्धान्त 7, कि उन्होंने झूठ बोला या 8, कि उन्होंने सच बोला।
और जब हम इस बिन्दु तक पहुँच जाते हैं, तो सम्पूर्ण मसीही विश्वास इस प्रश्न के इर्द गिर्द धूमता है: क्या ये शिष्य जो गवाह थे,सच्चे मुनष्य थे, जो वही बता रहे थे, जो उन्होंने देखा था, या साजिश रचने वाले थे, जिन्होंने अपनी इज़्ज़त बचाने के लिये एक झूठ को गढ़ा? चार कारणों से, मैं यह विश्वास नहीं करता, कि वे झूठ बोल रहे थे:

कारण 1. गवाहों के अन्दर, बेहतरी की ओर एक महाक्रांतिकरी परिवर्तन।

सभी यह मानते हैं, कि पतरस अधीर था, और झुण्ड के साथ भी अचल नहीं माना जा सकता था। वह डर के कारण भाग गया, और अपने प्रभु का इन्कार कर बैठा, वह सदैव अपने उग्र स्वभाव तथा अधीरता के कारण मुसीबत में फँस जाता था। पुनरूत्थान के बाद, वही व्यक्ति है, जो एक ठट्ठा करने वालों की भीड़ को प्रचार करता है, जो चट्टान बनने की अपनी नियति को पूरा करता है, और जो साहस पूर्वक यह निवेदन करते हुए मरता है, कि उसे उलटा लटकाया जाए, क्योंकि वह अपने स्वामी के समान स्थिति में मरने के लायक नहीं है – एक महा क्रांतिकारी परिवर्तन, जो कि इतिहास में एक विशेष बिन्दु से जोड़ा जा सकता है, और इतिहास का वह बिन्दु है, जब उन्होंने उसके पुनरूत्थान की कहानी सुनाना आरम्भ किया।

यूहन्ना? वह अत्यधिक रीति से आत्मकेन्द्रित था। वे उन दो "गर्जन के पुत्रों" में से एक था। जो भी उसका विरोध करता था, वह उस पर स्वर्ग से आग बुलवाना चाहता था। उसने और उसके भाई ने अपनी माता को उकसाया, कि वह उनके लिये स्वर्ग में सर्वोत्तम स्थान माँगे । उसके पुनरूत्थान की कहानी सुनाना आरम्भ करने के बाद, प्रत्येक विद्वान मानता है, कि यूहन्ना एक परिवर्तित व्यक्ति था। "गर्जन का पुत्र" होने के बजाय, वह प्रेम की अपनी निरन्तर अभिव्यक्ति मे लगभग पिनपिनाता (रोता) रहता है। वह "प्रेम का प्रेरित" कहलाया जाता है – एक सम्पूर्ण महाक्रांतिकारी परिवर्तन।

थोमा एक निरन्तर सन्देही है: आरम्भ से अन्त तक, वह सन्देही है। वह यथार्थवादी है; वह हर चीज़ के लिये प्रश्न उठाता है। जब यीशु समरिया में से होकर मृत्यु का सामना करने जा रहा है, तो वह अपने शिष्यों को इसके विषय में बताता है। तो थोमा कहता है, "चलो हम सब भी चलें, कि उसके साथ मर जाएं।" यह साहस है, पर वह सोच रहा था, कि यीशु वास्तव में मरेगा; यह एक मानवतावादी दृष्टिकोण है।

जब यीशु अपने चले जाने की और स्वर्ग में भवन तैयार करने की चर्चा कर रहा है, और कहता है, "जहाँ मैं जाता हूँ, तुम जानते हो, और मार्ग भी जानते हो, "तो शेष लोग निश्चित रूप से भवनों की बातें कर रहे हैं। थोमा प्रत्येक शब्द को सुन रहा है। वह कहता है, "हम नहीं जानते, कि तू कहाँ जा रहा है; तो हम मार्ग कैसे जान सकते हैं?" अब यह इस व्यक्तिगत लक्षण का एक वास्तविक चित्रण है।

और जब पुनरूत्थान हो जाता है, तो कौन सन्देह कर रहा है? वही व्यक्ति। "मैं तब तक विश्वास नहीं

करूँगा, जब तक मैं उसे छू न लूँ, उसकी मृत्यु के निशानों में अपने हाथ न डालूँ।" वह क्षण आ पहुँचता है। यीशु वहाँ आकर थोमा से कहता है, "देख मेरे हाथ और मेरा पंजर।" उसने कहा, "बिना देखे विश्वास करना अधिक धन्य है।" यह एक स्वयंसिद्ध सत्य है, परन्तु उसने थोमा पर दोष नहीं लगाया। उसने बस वह सत्य कह डाला, और फिर उसने परीक्षण के लिये स्वयँ को समर्पित कर दिया, वही जो आज हम कर रहे हैं। उसने कहा, "मेरे हाथों को और मेरे पंजर को देख।" और थोमा चिल्ला उठा, "मेरे प्रभु और मेरे परमेश्वर।"

यह महत्वपूर्ण है, कि संसार के सबसे अधिक दार्शनिक क्षेत्र में, जहाँ के वैदिक दर्शनशास्त्रों ने बौद्ध धर्म तथा उस में से उभरे अन्य पूर्वी धर्मों को जन्म दिया है, यह थोमा ही है, जो हिमालयों को चीर कर, मद्रास, भारत में जाकर शहीद होता है, और उस समय के संसार के सबसे अधिक चुनौतीपूर्ण दार्शनिक क्षेत्र में, इस विश्वास का अग्रदूत बन जाता है – एक निरन्तर सन्देहक से एक अटल "विश्वासी"।

अब, आप कह सकते हैं, एक संक्रांति (मुसीबत) लोगों को बदल देती है, परन्तु एक झूठ शायद ही लोगों को बेहतरी की ओर बदलेगा; वे तो और बुरे बन जाएंगे। ये मनुष्य महाक्रांतिकारी रूप से बेहतर बन गये हैं। मैं नहीं सोचता, कि झूठ बोलने से ऐसा होता है।

कारण 2. अप्रत्यक्ष प्रमाण तथा आन्तरिक सघनता (सामंजस्य)

सत्य के अप्रत्यक्ष प्रमाण होते हैं। मरकुस ने अन्यजातियों को लिखा; आप उसे मरकुस रचित सुसमाचार में गिन सकते है। उसमें मसीह ने अपने आपको, "मनुष्य का पुत्र", किसी अन्य सुसमाचार से अधिक कहा हैं। आप स्वयं गिन सकते हैं।

अब, यदि वह झूठा था, और जानता था, कि वह झूठ बोल रहा है, एक धोखा करने का प्रयास कर रहा था, तो वह क्यों यीशु के द्वारा अपने आप को ऐसे वाक्यांश से सम्बोधित करने को दोहराएगा, जो मानवीयता दर्शता है, जबकि उसका उद्देश्य है, कि यीशु को परमेश्वर के पुत्र के रूप में प्रस्तत करे? यदि वह झूठा है, तो वह यीशु के द्वारा अपने आप को केवल परमेश्वर का पुत्र कहलाने को दोहराता। परन्तु व्यंग्यात्मक रीति से, ईमानदारी के परमेश्वर के छोटे छिपे हुए प्रमाणों के रूप में, मरकुस के सुसमाचार में, जो अन्यजातियों को लिखा गया था, इस उद्देश्य से लिखा गया, कि यह प्रमाणित करे, कि यीशु परमेश्वर का पुत्र था, उसने किसी भी अन्य सुसमाचार से अधिक यीशु के द्वारा अपने आपको मनुष्य का पुत्र कहलाने को दोहराया।

अब, यीशु ने अपने आप को मनुष्य का पुत्र करके पुकारा तो **था**, क्योंकि यीशु एक इब्री भीड़ को प्रचार कर रहा था, जो हनोक की पुस्तक और दानिय्येल की पुस्तक पढ़ करती थी, जहाँ पर मनुष्य का पुत्र, मसीहा के रूप में चित्रित है, जो कि अपना राज्य स्थापित करने महिमामय बादलों में आएगा। तो यीशु के द्वारा एक मसीहा जैसे भाव में स्वयं को मनुष्य का पुत्र कहना ठीक था, परन्तु यदि आप अन्यजातियों को लिख रहे हों, जिन्हें पुराने नियम के विषय में कुछ नहीं मालूम और यह झूठ फैलाने का प्रयत्न कर रहे हों, कि यीशु , परमेश्वर का पुत्र है, जब तक आप पूर्ण रूप से ईमानदार हों और सच बोल रहे हों, आप को यीशु के द्वारा बार – बार "मनुष्य का पुत्र" बुलवाने की आवश्यकता नहीं है। आपके लाभ के लिये उसके कथन को क्यों

न बदल लें? अंतर्निहित ईमानदारी। मैं तो आपको ऐसे दर्जनों उदाहरण दे दूँ, परन्तु यह वह बात है, जिसे इतिहासकार ईमानदारी का अप्रत्यक्ष प्रमाण कहते हैं।

चलिये, मैं आपको एक और उदारहण देता हूँ। नये नियम के संसार में, स्त्रियों को विश्वसनीय गवाह होने के योग्य नहीं समझा जाता था। शिष्यों को यह मालूम था, तो क्यों वे स्त्रियों को पुनरुत्थान के पहले गवाहों के रूप में प्रस्तुत करते? यदि वे झूठ बोल रहे थे, तो वे जानते थे, कि संसार महिला गवाहों पर विश्वास नहीं करेगा। झूठे लोग महिला गवाहों का बयान नहीं देते। इससे अधिक सहज प्रमाण था, कि वे केवल वे बाते बता रहीं थी, जो वास्तव में घटी थीं।

यह तथ्य, कि शिष्य सात सप्ताहों तक रूके रहे, वह उन लोगों के द्वारा जो कहते हैं, कि शिष्य झूठ बोल रहे थे, इस प्रकार प्रयोग किया जाता है, कि उन्हें इतना समय इस झूठ को गढ़ने के लिये आवश्यक था। यदि वे इस प्रकार का झूठ बोलने के लिये इतने चालाक थे, तो मेरा विचार है, कि उन्होंने इसको अच्छी तरह समझ लिया होगा। वे सात सप्ताह इसलिये रूके, क्योंकि यीशु ने उन्हें रूकने को कहा था। यह ईमानदार मनुष्यों की कहानी है, चाहे इतने समय तक रूकने से उनकी कहानी पर आंच आई–यदि वे झूठ को गढ़ना चाह रहे थे।

कारण 3. दाम चुकाया गया।
आप झूठ बोलने के लिये, इन मनुष्यों के समान दाम नहीं चुकाएंगें इनमें से सभी, यूहन्ना को छोड़ शहीद हुए बरतुलमै को आर्मीनिया में कोड़े मार कर मारा गया; थोमा एक ब्राह्मण की तलवार से छेदा गया; पतरस को क्रूस पर उलटा लटकाया गया; संत अंद्रियास को संत अंद्रियास क्रूस पर क्रूसित किया गया (जहाँ से उसका नाम निकला है) ; लूका को मूर्तिपूजक पुजारियों द्वारा लटकाया गया, मरकुस को सिकन्दरिया की सड़कों पर घसीटा गया। इन लोगों ने अपने "झूठ" के लिये अविश्वसनीय दाम चुकाया।

कारण 4. वे अकेले मरे।
शिष्यों की सत्यवादिता एवं पुनरूत्थान के लिये, संत थॉमस अक्विनास का महान – मेरे विचार से महानतम – प्रमाण यह है, कि वे अकेले मरे। अब, जैसा कि मैं प्रति वर्ष संदेश समाप्त करने के बाद करता हूँ, मैं ऐसे मनुष्यों के झुण्ड कल्पना कर सकता हूँ, जो अपनी इज़्ज़त को बचाने का प्रयास कर रहे हैं, एक कहानी सुना रहे हैं, गलत इन्सान पर बाजी लगाकर बैठे हैं, उसकी असफलताओं से दबे हुए हैं (उनके दृष्टिकोण से) और एक झूठ को गढ़कर उसे जिलाना चाह रहे हैं।

मैं कल्पना कर सकता हूँ, कि वे कैसे एक साथ रह रहे हैं, और उनके झूठ की सघनताएं, सामूहिक दबाव द्वारा बंधी हुई हैं, क्योंकि वे दूसरों का भण्डाफोड़ करके, सारी योजना को विफल करने वाले, और विश्वास को त्यागने वाले, पहले नहीं होना चाहते।

आइये, हम कल्पना कर लेते हैं, कि बॉबी बायल और जेरी मैकिंटायर और रिचर्ड विलियम्स ने इस कहानी को गढ़ा। आपके पास टेलिविज़न नहीं है, सैटेलाइट नहीं है, फैक्स नहीं है, टेलिफोन नहीं है और जब तक

आप अत्यधिक दबाव के कारण साथ रहते हैं, तो जेरी आपको रिचर्ड और बॉबी को धोखा देने की आवश्यकता नहीं है।

परन्तु अब आप अलग – अलग हो जाइये । आप जेरी, आरमीनिया में बरतुलमै बन जायें; और आप बॉबी, भारत में थोमा बन जायें। और रिचर्ड, आप रोम में पतरस बन जाएं। आप लोगों ने एक दूसरे से सम्पर्क खो दिया है। आप फोन उठाकर किसी से बात नहीं कर सकते; कोई नहीं जानता कि आप कहाँ हैं, और क्योंकि आपको मालूम है, कि आप झूठ बोल रहे हैं और आप जानते हैं, कि सदैव आने वाली पीड़ियाँ इस पर विश्वास नहीं करेंगी और आप जेरी आरमीनिया में कोड़े से मारे डाले जा रहे हैं, वास्तव में – अर्थात् चाबुक से पीटे जा रहे हैं, और आपकी चमड़ी उधड़ रही है – तो आपको वहाँ से बाहर निकलने के लिये केवल इतना कहना है, "यह सब झूठ था" और "मुझे क्षमा करें। मैं शहर छोड़ कर जा रहा हूँ।

बॉबी को यह पता भी नहीं चलेगा; रिचर्ड को भी यह पता नहीं लगेगा। आप उनसे अगली बार मिलने पर, आपस में अपने अनुभव बाँटते समय कह सकते हैं, "अरे यार, मैंने आरमीनिया के लोगों को ऐसा प्रभावित कर दिया। मैंने अपनी कहानी सुनाई, और अब कोई भूल नहीं सकता, कि मैंने क्या बताया था। "बॉबी और रिचर्ड को कभी पता नहीं लगेगा, कि आप झूठ बोल रहे हैं।"

बॉबी, आप भारत में तलवार से छेदे जाने वाले हैं। आप जेरी या रिचर्ड को फिर कभी नहीं देखेंगे। आपको सारे संकट में से बाहर निकलने के लिये केवल यह कहना है, "यह सब झूठ है।"

रिचर्ड, आप रोम में हैं। आप के विषय में लोग थोड़ा अधिक जानते हैं, परन्तु जब आपका जीवन दांव पर लगा है, तो आपको केवल यह कहना है, "क्षमा करें। शायद मैने ऐसा सपना देखा था", और चुपके से फ्राँस चले जाएं।

जैसा थॉमस अक्विनास ने कहा था, यह मनोवैज्ञानिक रीति से कल्पना के परे है, कि इन लोगों ने, दूर-दूर होते हुए भी, अपनी – अपनी कहानी के लिये उत्कृष्ट दाम चुकाया, और अकेले – अकेले अपने प्राण त्याग दिये और झुण्ड में से एक ने भी अपने साथियों को धोखा देकर यह नहीं कहा, "अरे, यह सब तो झूठ था।"

अकेले मरने के लिये। और 2000 वर्षों के क्रूर आलोचकों के होते हुए भी संसार भर में ऐसे प्रमाण का कोई अंशमात्र या आलेख नहीं मिलता, कि इनमें से कोई भी, इस कहानी को सुनाने में अपनी भयंकर मृत्यु का सामना करते हुए अपने विश्वास में अस्थिर हुआ हो। इसलिये मैं इस निष्कर्ष तक पहुँचा हूँ, कि किसी भी हालत में ये लोग झूठ नहीं बोल रहे थे। वे वही कह रहे थे, जो उन्होंने वास्तव में सोचा, अनुभव किया और देखा।

मुझे याद है, कि यह सब मैंने स्टैनफर्ड में मेरे प्राध्यापक लैरी थॉमस के सामने समझाया था, और उन्होंने मुझसे कहा, "जीन, मैं कायल हो गया हूँ। इन लोगों ने अपनी कहानी पर विश्वास किया था। इस कारण, उन अन्य आठों तथ्यों में से कोई गलत होगा।" अब यदि आप ईमानदारी से ऐसा कहते, तो मैंने आपको

कायल कर दिया, क्योंकि वे अन्य आठ तथ्य अधिक सरलता से प्रमाणित किये जा सकते हैं। तो विकल्प क्या है?

यह सच है, और वह कब्र में से बाहर निकल कर आया।

तो यदि यह सच है, तो अब क्या करें? शेष सभी बातें सच्ची हैं, और मुझमें एक अनन्तकालीन परमेश्वर में विश्वास करने का एक प्रारम्भिक बिन्दु मिल गया है। और अब मैं उस देहली को पार कर चुका हूँ, जहाँ मैं यह समझ सकता हूँ, कि मसीहत क्या है, क्योंकि यदि मैं यह विश्वास कर सकता हूँ, कि यीशु मसीह उन कफन के कपड़ों मे से, उस पत्थर में से, उस द्वार में से निकल कर नीले आकाश में ऊपर चढ़ गया, तो आणविक प्रतिस्थापन उसके लिये कुछ अर्थ नहीं रखता – वह उसे, बिना विस्फोट के कर सकता है। यह सच है, कि सब चीज़ें उसी में हैं, और वह उन्हें नियंत्रित कर सकता है।

इसी लिये, यह विश्वास करना बिलकुल कठिन नही हैं, कि परमेश्वर का वही तत्व, जो मरियम में डाला गया, पवित्र आत्मा के द्वारा, नासरत के यीशु के रूप में बाहर आया। परमेश्वर कहता है, कि जब हम उस पर भरोसा करते हैं, तो वह उसी परमेश्वर – तत्व को हमारे अन्दर डाल देता है। यही सच्चा नये जन्म का अनुभव है – जीवन की उत्पत्ति, पुनर्जीवन, एक नई सृष्टि जो मेरी कोषिकाओं में प्रवेश करती है, और जब मैं परमेश्वर के वचन पर भरोसा करके उससे जुड़ जाता हूँ, तो वरदान स्वरूप मेरे अन्दर डाली जाती है।

सही रूप में मसीहत का उद्गम यही है, कि मसीह जो महिमा की आशा है, हमारे अन्दर है। मसीहत को समझने के लिये, मुझे कोई रहस्यवादी या उत्तेजित सनकी बनने की आवश्यकता नहीं है। अब मैं जीवन भर उसके वचनों का पालन करने में गुज़ार सकता हूँ, जिसमें, पुराने नियम और उसमें दी गई प्रतिज्ञाओं के प्रति उसके द्वारा जोड़ा गया अधिकार शामिल है। और जब भी मैं उन्हें पकड़ कर अपने विश्वास के अनुसार चलता हूँ, और भरोसे से उस कार्य को करता जाता हूँ, वह विश्वास का सम्बन्ध मुझे उसी जीवन – तत्व में बनाए रहता है, **जैसा वह था, जिसने मसीह को मृतकों में से जिलाया** वह जीवन–तत्व मेरे स्वभाव को बदलने में उतना ही सक्षम है, जितना एक विघटनाभिक (रेडियो – ऐक्टिव) पदार्थ, चाहे वह अदृश्य हो, आपके द्वारा उठाये जाने पर, आपकी कोषिकाओं की संरचना बदल सकता है।

परमेश्वर हमारे अन्दर ऐसा जीवन डाल देता है, जो पुनर्जीवित हो सकता है, और इसी कारण, आत्मिकता, आत्मा की अभिव्यक्ति है और धार्मिकता, आत्मा का फल कहलाती है। यह हमारे अन्दर से निकला नया जीवन ही है, जो कि केवल उसके वचन पर विश्वास करने से संरक्षित होता है, परन्तु यह उस अटल चट्टान पर संस्थापित एवं आधारित है, जो कि "वह मृतकों में से जीवित हुआ" का प्रामाण्य लक्षण है, और यह मुझे यह मानने के लिये विश्वास प्रदान करता है, कि वह उस दूसरे कार्य को भी करेगा, जो उसने कहा, अर्थात् वह पुनः वापस आएगा।

प्रतिलिप्यधिकार © 2007 पास्टर मेलिसा स्कॉट – सर्वाधिकार सुरक्षित
Copy right © 2007 Pastor Melissa Scott All Rights Reserved